# आँखों की बुराइयाँ

**आँखें!** अल्लाह की अ़ज़ीमतरीन ने'मत। इनकी अहमियत उनसे पूछिये जो देख नहीं पाते। लेकिन इन्हीं आँखों से हम, हर रोज़ न जाने कितने गुनाह कर बैठते हैं। हमारी आँखों की बुराई से अगर कोई महफ़ूज़ (सुरक्षित) नहीं है तो फिर हमें अपने ईमान के बारे में सोचना होगा कि कहीं वो ज़ाइल (बर्बाद) तो नहीं हो गया? आँख की बुराई किस ह़द तक पहुँचती है, उसके बारे में एक शाइर ने लिखा है,

**'सभी ह़ादसे नज़र से शुरू होते हैं और छोटी-सी चिंगारी से भयंकर आग भड़क उठती है। पहले नज़र, फिर मुस्कान, फिर सलाम, फिर कलाम, फिर वा'दा और फिर मुलाक़ात।'**

इन्सान की आँख क्या-क्या ख़ताएं कर सकती है, इसे इन्सानों के ख़ालिक़ (स्रष्टा) अल्लाह सुब्ह़ान व तआ़ला से बेहतर कौन जानता है, इसीलिये उसने हुक्म नाज़िल फ़र्माया,

**'मोमिन मर्दों से कहो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें, यह उनके ह़क़ में ज़्यादा पाकीज़ा बात है। बेशक अल्लाह उसकी ख़बर रखता है, जो कुछ वे करते हैं। और मोमिन औ़रतों से भी कह दो कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें।'** (सूरह नूर : 30-31)

# बुरी आँखों से होने वाले नुक़्सानात

**आँखों से बड़ी कोई तराज़ू नहीं होती,**
**तुलता है बशर जिसमें वो मीज़ान हैं आँखें.**

जब कोई आदमी, किसी औरत को ग़लत निगाह से देखता है तो उसके बुरे अष्रात सामने आते हैं। इन्हें इसलिये बयान किया जा रहा है ताकि लोग उनके प्रति सचेत हों और उनसे बच सकें।

## 01. अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी करना

क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला ने बहुत से मक़ामात पर मुस्लिम मर्दों व औरतों को यह हुक्म दिया है कि वो अपनी निगाहें नीची रखे, पिछले पन्ने पर सूरह नूर की आयतें आप पढ़ ही चुके हैं। किसी ग़ैर औरत को देखना आँख का ज़िना है, इसका ज़िक्र तफ़्सील के साथ आगे आएगा। लिहाज़ा क़ुर्आने करीम में इर्शादे-बारी तआला है,

**'ज़िना के क़रीब भी न जाओ, वह बड़ी बेहयाई का काम है और बहुत बुरी राह है।'**

(सूरह बनी इस्राईल : 32)

जो आदमी किसी औरत को बुरी निगाह से देखता है वो अल्लाह तआला के हुक्मों की नाफ़र्मानी करता है। अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी करना फ़ासिकों का काम है। अगर कोई इन्सान अपनी इस्लाह न करे तो वो जहन्नम का हक़दार बन जाता है।